शैक्षिक मनोविकज्ञान और शिक्षण (Educational psychology and teaching)

उद्देश्य : इस पाठ के अन्त में आप निम्नलिखित कार्य करने योग्य होंगे :

- **मनोवज्ञिान को परिभाषित करना**
- **शैक्षिक मनोविज्ञान की व्याख्या करना**
- **मनोविज्ञान की प्रकृति और की व्याख्या करना।**
- **शिक्षक/प्रशिक्षक के लिये शैक्षिक मनोविज्ञान को सूचीबद्ध करना।**
- **शिक्षण को परिभाषित करना**
- **प्रभावी शिक्षण के चरणों की सूची बनाना।**
- **explain the principles of teaching.**

परिभाषा (Definition)

मनोविज्ञान को परिभाषित किया जा सकता है क्योंकि मनोविज्ञान, मानव व्यवहार और मानसिक प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन है। मनोविज्ञान (Physcology) की उत्पत्ति ग्रीक शब्दों "Pschye" अर्थ आत्मा और Logos का अर्थ विज्ञान होता है।

अतः मनोविज्ञान (Physchology) में एक वैज्ञानिक अध्ययन की छह शाखा है, जिसमें मानव मन और उसके सचेतन और अचेतन व्यवहार को कैसे प्रभावित किया जा सकता है का अध्ययन किया जाता है।

शैक्षिक मनोविज्ञान कुछ नही, बल्की प्रायोगिक मनोविज्ञान की एक शाखाओं में से एक शाखा है। दूसरे शब्दों में, शैक्षिक मनोविज्ञान शैक्षिक प्रशिक्षण वातावरण के सबंध में सीखने वाले और अनुभवों और व्यवहार का अध्ययन है

समय-समय पर मनोवैज्ञानिक ने शैक्षिक मनोविज्ञान को अपने तरीक से परिभाषित करने की कोशिश की है इन परिभाषाओं में से कुछ नीचे दी गई है।:-

- **स्कीनर :** शैक्षिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक ऐसी वह शाखा है जो शिक्षण और सीखने से सबंधित है
- **को और क्रो :** शैक्षिक मनोविज्ञान जन्म से लेकर वृद्धावस्थ तक व्यक्ति के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।

शैक्षिक मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature of educational psychology)

हम शैक्षिक मनोविज्ञान की प्रकृतिकी को संक्षेप में तरीके से बना सकते है:-

- यह शैक्षिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के विषय की प्रयौगिक शाखा है मनोविज्ञन के सिद्धांतों ओर तकनीकों को लागू करने से यह सीखने बालों के व्यवहार और अनुभवों का अध्ययन करने की कोशिश करता है।
- जबकि मनोविज्ञान जीवन के समीक्षेत्रों में सभी व्यक्तियों के व्यवहार से सबंधित है शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षा और प्रशिक्षण (वातावरण के संबंध में सीखने वाले) प्रशिक्षु के साथ अपने व्यवहार को सीमित करता है। यह शिक्षा के साथ क्या या क्यों नही करता है यह प्रदान करता है शिक्षार्थीयों को जनक तरीके से शिक्षा देने के लिये आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करता है।
- यह एक आर्दश विज्ञान नही है क्योंकि इसका शिक्षा के मूल्यों से कोई सरोकार नही है और जो होना चाहिए उसके साथ खुद की चिंता नही करता है यह एक सकारात्मक विज्ञान है।
- शैक्षिक मनोविज्ञान एक आदर्श विज्ञान नही है इसके अपने है मानव व्यवहार अप्रत्याशित है यह अधिक परिवर्तन शील और कम विश्सवनीय है इसलिये शैक्षिक मनोविज्ञान लागू व्यवहार विज्ञान प्राकृतिक विज्ञानों द्वारा दावा किये गये उद्देश्य या सटीकता और वैद्यता का दावा नही कर सकता है यहाँ तक कि चिकित्सा और इंजीनियरिंग आदि जैसे विज्ञान भी यह दावा नही कर सकता है।
- यह वैज्ञानिक पद्धति को है और शैक्षिक शॉट प्रथिक्षण वातावरण में किसी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिये वैज्ञानिक दृष्टीकोण अपनाता है।
- इसके अलावा सामान्य व्यवहारके कारकों और भविष्यवाणी को नियंत्रिक करना शैक्षिक मनोवज्ञिान को पूर्ण वैज्ञानिक आधार देना है यह एक प्रयौगिक सकारात्मक विज्ञान है।

शैक्षिक मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope of educational psychology)

शैक्षिक मनोविज्ञान शैक्षिक स्थितियों (स्थिति) में प्रशिक्षणार्थी के व्यवहार के साथ संबंधित है इसलिये यह अनिवार्य हो जाता है कि शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया और शैक्षिक और प्रशिक्षण वातावरण की चार दीवारों में ही सीमित होना चाहिये इसे वास्तविक शिक्षण या शिक्षक स्थितियों में विकसित होने वाली समस्याओं को हल करने की कोशिश करनी चाहिये और इस प्रक्रिया में शामिल व्यक्तियों की मदद करना चाहिये।

हमें यह आंकना है कि एक शैक्षिक प्रक्रिया के प्रमुख कारक क्या है और उन्हें एक के बाद एक सूचबीद्ध करें।

a सीखने वाला (प्रशिक्षु)

b सीखने के अनुभव

c सीखने की प्रक्रिया

d सीखने की स्थितियाँ या वातावरण

e शिक्षक (प्रशिक्षक)

शैक्षिक मनोविज्ञान की विषय वस्तु यदि यह अपनी सीमाओं को खींचने के लिये आवश्यक है, तो ऊपर दिये गये इन पाँचों धुरी पर घूमता है।

The learner

यदि शिक्षार्थी को हम पहली घुटी मानते है तो हम पाते है कि शैक्षिक मनोवज्ञिान शिक्षार्थी के आसापास बना हुआ विषय है इसकी विषय वस्तु का यह भाग हमे सीखने वाले की आवश्यकता से परिचित करता है और उसे अच्छी तरह से जानने की तकनीकों से संबंधित है।

जन्मजात व्यक्तिगत मतभेदों और उनके मापों की जन्मजात क्षमताओं, जागरूक और साथ हीसाथ शिक्षार्थीयों के अचेतन व्यवहार बचपन से व्यवस्कता तक शुरू होने वाले प्रत्येक चरण में विकास और विकास की विशेषताएं

सीखने का अनुभव (The learning experiences)

एक बार शैक्षिक मनोविज्ञान का किसी कार्य के चरण में उद्देश्य और लक्ष्य को तय करने का काम समाप्त हो जाता है, तो वहाँ शैक्षिक मनोविज्ञान की आवश्यकता महसूस की जाती है। इस मोड पर शैक्षिक मनोविज्ञान यह तय करने में मदद करता है कि सीखने वाले अनुभावों को अधिक सहायता और संतुष्टि के साथ हासिल किया जा सके। इस क्षेत्र में शैक्षिक मनोविज्ञान में विषय वस्तु है जो मनोवज्ञिान के ज्ञान और सिद्धांतो से सबंधित है, जो सीखने वाले के लिये सीखने के योग्य अनुभवों के चयन की सुविधा प्रदान करता है।

सीखने की प्रक्रिया (The learning process)

इस छुटी के चारों ओर शैक्षिक मनोविज्ञान, शपथ ग्रहण की प्रकृति से संबंधित है और यह कैसे होता है और इसमें कानून, सिद्धांत, जैसे विषय शामिल है, याद रखना और भूल जाना, विचार करना, अवधारणा निर्माण, सोच और तक प्रक्रिया समस्या का समाधान, प्रशिक्षण का हस्तांतरण, प्रभावी सीखने के तरीके और साधन, आदि।

सीखने की स्थितियाँ या वातावरण (Learning situations or environment)

क्लास रूप वातावरण और ग्रुप डायनेमिक्स की तकनिकों और साधन जो सीखने सुविधा प्रदान करते है, मूल्यांकन तकनीकों और प्रक्रियाएँ मार्ग दर्शन और परामर्श आदि जो कि शिक्षण सीखने की प्रक्रिया के सुचारू संचालन में सहायता करते है, इस छुटी के अधिकार क्षेत्र में आते है।

शिक्षक/प्रशिक्षक (The teacher/trainer)

शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा में की प्रक्रिया में अपनी भूमिका को ठीक से निभाने के लिये शिक्षक के स्वंय को जानने की आवश्यकता पर जोर देता है यह उनके संघर्षो प्रेरणा, चिंता, समायोजन, आकांक्षा के आदि पर चर्चा करता है यह आवश्यक व्यक्तित्व विशेषताओं रूचियों, प्रभावी शिक्षण। प्रशिक्षण आदि की विशेक्षताओं पर प्रकाश डालता है ताकि एक सफल शिक्षक या प्रशिक्षक बनने के लिये प्रेरित किया जा सके।

शिक्षक/प्रशिक्षक के लाभ (Advantages for a teacher/trainer)

शिक्षकों के लिये पढ़ने से पूर्व से तैयार प्रोग्रामों में शैक्षिक मनोविज्ञान का समावेश एक बहुत ही व्यापक उपयोगिता है यह उन्हें अपने व्यवसाय में ठीक से विकसित करने में मदद करता है।

शिक्षार्थी को जानना (To know the learner)

शैक्षिक मनोविज्ञान निम्नलिखित विभिन्न तरीकों से शिक्षार्थी को समझने के लिए शिक्षक/प्रशिक्षक को करता है।:-

- उनकी रूचियां, दृष्टिकोण, अभिरूचि और अन्य अधिग्रहित या जन्मागत क्षमता और क्षमता आदि।
- उनके सामाजिक भावनात्मक, बौद्धिक शारीरिक और सौदर्य सबंधी जरूरतों से जुडे विकास का चरण।
- उसकी आकांक्षा का स्तर।
- उसका चेतन और अवचेतन व्यवहार।
- उसका प्रेरक व्यवहार।
- उसके समूह व्यवहार का पहलू।
- उसके संघर्ष, इच्छाओं और उनके मानसिक स्वास्थय के अन्थ पहलू में।

To select and organise the subject-matter or learning experiences. विषय वस्तु या सीखने के अनुभवों का चयन करना शिक्षार्थी का जानने के बाद जब वह अवस्था आती है कि शिक्षार्थी को शिक्षित किया जाये तो निम्नलिखित प्रश्न राह में आते है :-

किस प्रकार के शिक्षण अनुभव या शिक्षण सामग्री प्रदान की जानी है?

हमें सामग्रीयों को कैसे व्यवस्थित या ग्रेडिंग करना चाहिये और अनुभवों से कैसे सीखना है।

इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना है जो पाठयक्रम निर्माण के क्षेत्र के साथ-साथ सीखने वाले के विशेषताओं के ज्ञान को उसके। उसके विकास्स के प्रत्येक चरण में सीखने की प्रकृति और नियमों आदि की आवश्यकता होती है , जाकि शैक्षिक मनोविज्ञान के अंतर्गत आते है।

To suggest art and techniques of learning as well as teaching. शिक्षण के साथ-साथ, सीखने की कला और तकनीकों का सुझाव देना। सीखने वाले और सीखने की सामग्री का निर्णय करने के बाद अगली समस्या उसे कैसे सीखना है यह भी शैक्षिक मनोविज्ञान की मदद से हल की गई है। यह सीखने की प्रक्रिया की व्याख्या करता है और प्रभावी और स्थायी सीख्ने के लिये साधन का सुझाव देता है। यह बताता है कि सीखने की प्रक्रिया में रूचि कैसे बनाए रखी जाती है। यह भी बताता है कि सभी परिस्थितियों में सभी प्रकार के शिक्षार्थियों के लिये एक भी विधि या तकनीक उपयुक्त नही है। एक शिक्षक को सीखने की परिस्थितियों अनुसार जिसका वह सामना का करता है एक उचित उपकरण या विधि का चयन करना चाहिए।

सीखने की स्थिति या वातावरण की व्यवस्था करना (To arrange learning situations or environment) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर शिक्षण वातावरण (उपकरण सुविधाओं और शिक्षण/प्रशिक्षण सहायता

सामग्री सहित) के प्रभाव का अध्ययन, शिक्षक/प्रशिक्षक को उपयुक्त शिक्षण की स्थितियों या वातावरण के रूप में देख भाल करने के लिये सुसज्जित करता है।

आनुवंशिकता और पर्यावरण के तंत्र के साथ उसे कराना (To acquaiant him with the mechanism of heredity and environment) विकास की प्रक्रिया और बच्चे के विकास में लिये अनुवांशिकता और पर्यावरण द्वारा निभाई गई भूमिका का ज्ञान बहुत आवश्यक है।

अनुशासन बनाये रखने में मदद करना (Helping in maintaining discipline) शैक्षिक मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक/प्राथमिक को एक रचनात्म प्रकार का अनुशासन बनाने में मदद करता है क्योंकि यह उसे सीखने वाले की प्रकृति उसकी ताकत और कमजोरी, उसके हितों और अभिरूचियों आदि से परिचित कराता है। एक ओर कला शिक्षण की तकनीकों के साथ और दूसरी और सीखने के बारे में मदद करता है।

शिक्षण मार्गदर्शन सेवाएं प्रदान करता (Rending guidance services) एक शैक्षिक मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षार्थियों को मार्गदर्शन सेवाएं प्रदान करने में शिक्षक प्रशिक्षक की मदद करता है वो वह व्यक्ति है जो के माता-पिता की तुलना में, उसे बेहतर और भी अधिक जान सकता है। अपने आदेश में वह शैक्षिक मनोविज्ञान के ज्ञान के साथ वह व्यवहार मूल्यांकन और मूल्यांकन के तरीकों के सर्म्पक में रहता है वह बेहतर ढंग से अपने शिक्षार्थियों की क्षमताओं, रूचियों और अभिरूचियों का निदान कर सकता है और उसके परिणामस्वरूप उनके विकास की दिया और गति का रहता है इस प्रकार शैक्षिक मनोविज्ञान की सहायता से इस तरीके से अपने शिक्षार्थीयों की उनके संपूर्ण विकास के लिये सही दिशा दिखा सकते है।

मूल्यांकन और आकलन में मदद करना (Helping in evaluation and assessment) शिक्षार्थी को रोकने के अनुभव प्रदान करने के बाद, उसके द्वारा किये गये व्यवहारिक परिवर्तनों की जाँच की जानी चाहिये और साथ ही शुरूआत में उन क्षमताओं को भी जानना चाहिये, जो शैक्षिक मनोविज्ञान में भौतिक व्यवहार विज्ञान, मूल्यांकन माप ओर मूल्यांकन के रूप में अपना साधन बनाते है, जो कि शिक्षक को अच्छी तरह से सुसज्जित पेशेवर कौशल के साथ विकसित करता है।

क्लासरूम की समस्याओं का समाधान (Solving class room problems) क्लासरूम की स्थितियों में सीखने वालों की विशेषताओं का अध्ययन, समूह की गतिशीलता, व्यवहार सबंधी विशेषताएं रूप की समस्याओं को हल करने के लिये शिक्षक/प्रशिक्षक रहते है।

स्वयं/खुद के बारे में जानना (Knowing about himself) शैक्षिक मनोविज्ञान के ज्ञान शिक्षक/प्रशिक्षक को स्वयं के बारे में जानने में मदद करते है। स्वंय के व्यवहार, व्यक्तित्व की विशेषतायें पसंद औश्र नापंसद प्ररेणा, संघर्ष समायोजन आदि सभी की जानकारी पता चलती है

शिक्षकों/प्रशिक्षकों की आवश्यकता और समस्याऐं बहुत सी है ओर उनके बहुत सारे पहलू है शिक्षा का विज्ञान और तकनीक होने के नाते शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षक/प्रशिक्षक को शिक्षण और सीखने के सभी चरणों में मदद करता है, चाहे वह अनोपचारिक या औपचारिक, पाठयक्रम या सह शिक्षा हो। यह न केवल क्लासरूप निर्देश के लिये सुसज्जित है, लेकिन अन्य कर्तव्यों के लिये भी जैसे कि यह पाठ्यचर्चा सबंधी गतिविधियों के टाइम टेबल के निर्माण के लिये, माता-पिता के सहयोग आदि की तलाश करने में भी सहयोगी है।

इसमें हम देख सकते है कि शैक्षिक मनोविज्ञान एक ऐसा विषय है, जो शिक्षकों के समुचित व्यावसायकि विकास के लिये बहुत आवश्यक है और यही कारण है कि सभी चरणों के शिखक/प्रशिखक कार्यक्रमों में एक अनिवार्य विषय है।

शिक्षण/प्रशिक्षण (Teaching/training)

शिक्षक/प्रशिक्षण एक निर्देशात्मक गतिविधि है जो कोई अन्य व्यक्ति किसी विशेप कौशल या विषय या ऐसी किसी चीज को वितरित करना जो कोई आपको करने को कहता है। इसका उद्देश्य नैतिक ओर से सार्थक सीखने के बारे में इसमें शिक्षक/प्रशिक्षक शिक्षार्थी ज्ञान के रूप में शामिल है, सूचना और कौशल प्रदान किया जाना भी शामिल है।

व्यावसायिक रूप से मूल भूत दो तरीके समझ आते है पहले दृष्टिकोण में शिक्षण/प्रशिक्षण एक प्रशिक्षिण केन्द्रीय गतिविधि है, जिसमें ज्ञान किसी ऐसे व्यक्ति को प्रसारित किया जाता है, जिसने उस मान को नौसिखियाँ शिक्षार्थीयों के लिये हासिल किया है। (Fig 1)

Fig 1

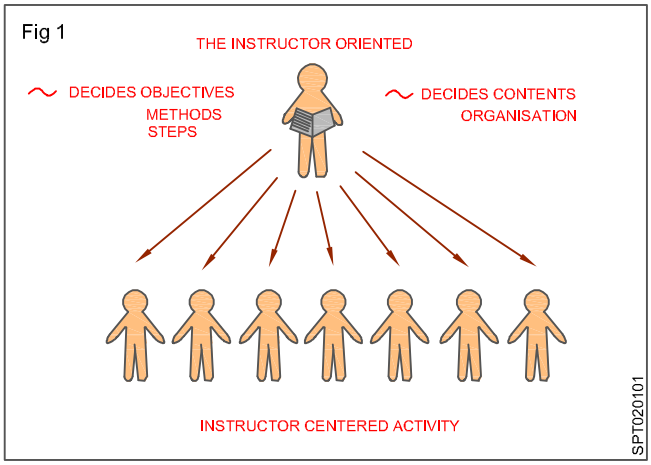

(Fig 2) दूसरे दृष्टीकोण में मिश्रण/प्रशिक्षण एक शिक्षण गतिविधि के रूप में है जिसमें प्रशिक्षक यह सुनिचित करता है कि शिक्षार्थी के लिये सीखना संभव बनाया गया है और उन्हें नये ज्ञान और कौशल के सक्रिय और स्वतंत्र निर्माण में प्रोत्साहित करता है

Fig 2

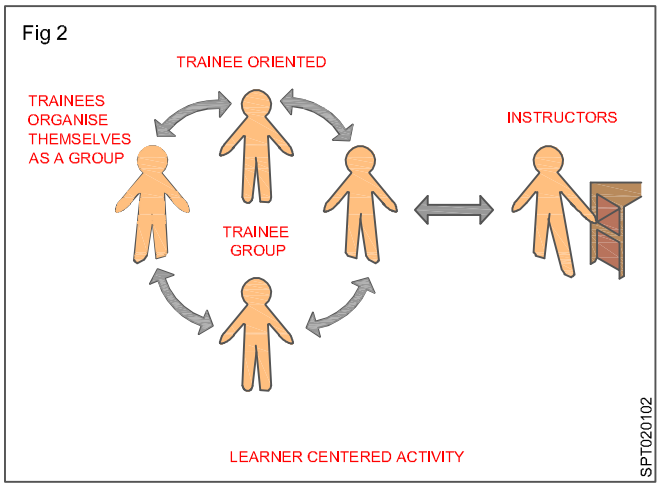

शिक्षण/प्रशिक्षक कौशल (Teaching/training skills)

शिक्षण/प्रशिक्षक एक जटिल बहुक्रियाशील गतिविधि है, जिसमें अक्सर एक प्रशिक्षक को कई कार्यो और लक्ष्यों को एक साथ और लचीले ढंग से टालने की आवश्यकता होती है। सिद्धांतों का निम्नलिखित सेट हमें प्रशिक्ष शिक्षण का सर्मथन करते समय स्थितियों को बनाने में मदद करके शिक्षण की और अधिक प्रभावी और कुशल बना सकते है। इस सिद्धांतों को समय और प्रयास में एक प्रतिबद्धंता की आवश्यकता होती है, यह अक्सर बाद में समय और ऊर्जा बचाता है।

एक प्रभावी प्रशिक्षण में प्रशिक्षुओं के बारे में प्रसंगिक ज्ञान प्राप्त करने और हमारे पाठयक्रम डिजाईन और क्लास रूप शिक्षण/प्रशिक्षण को सूचित करने के लिये, उस ज्ञान की जानकारी देना समाहित है (Effective teaching involves acquiring relevant knowledge about trainees and using that knowledge to inform our course design and classroom teaching/training)

जब हम शिक्षित/प्रशिक्षित करते है, तो हम केवल समग्री का शिक्षण नही करते है, हम उन्हें सामग्री का शिक्षण करते है शिक्षार्थीयों की विभिन्न प्रकार की विशेषताएँ उनके सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। उदाहरण के लिये शिक्षार्थी सांस्कृतिक और पीटीगत पृष्टभूमि को प्रभावित करते है कि वे दुनिया को कैसे देखते है, अनुशासनात्मक पृष्ठ भूमि से शिक्षार्थी विभिन्न तरीकों से समस्याओं का सामना कर सकते है और उसका पूर्व ज्ञान बेशक नये शिक्षण को आकार देता है (सटीक और गलत दोनों तरह के पहलू)

प्रभावी शिक्षण में शामिल तीन प्रमुख घटक है : सीखने के उद्देश्य, आकलन और निर्देशात्मक गतिविधियां (Effective teaching involves aligning the three major components of instruction: learning objectives, assessments, and instructional activities)

Fig 3

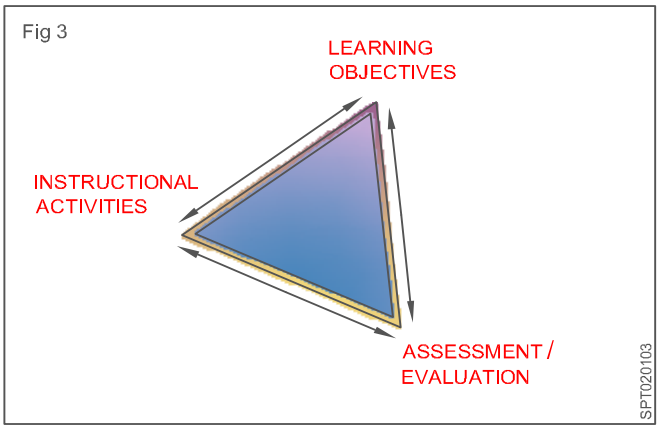

a) शिक्षण अधिक प्रभावी होता है शिक्षार्थी के सीखने की क्षमता तब बढ जाती है जब तक हम प्रशिक्षक के रूप में जैसा कि, प्रशिक्षक सीखने के उद्देश्य के सग्रह को स्पष्टता से व्यकत करता है। (जो कि हम एक कोर्स के अंत में शिक्षार्थीयों द्वारा प्रदर्शित करने की उम्मीद करते है।)(b)निदेशात्मक गतिविधियों (उदा० केस स्टडी, लैब, चर्चाए, पठन) इन सीखने के उद्देश्य को हम लक्ष्य उन्मुख अभ्यास प्रदान करके पूरा करने में मदद करती है। (c) आकलन (उदा० टेस्ट परिक्षा) कागजता, समस्याओं का समूह, प्रदर्शन/ शिक्षार्थीयों को प्रदर्शन के लिये अवसर प्रदान करता है और उद्देश्य में व्यक्त ज्ञान और कौशलों का अभ्यास करते है, और प्रशिक्षकों के लिये लक्षित फीडबैक को प्रेरित करता है, जो आगे के सीखने के लिये मार्गदशन कर सकते है।

प्रभावी शिक्षण में शिक्षण उद्देश्यों के बारे में अपेक्षाओं को सपष्ट करना शामिल है प्रभावी शिक्षण में सीखने के उद्देश्यों और नीतियों के बारे में कलात्मक अपेक्षाएँ शामिल है। (Effective teaching involves articulating explicit expectations regarding learning objectives and policies)

ट्रेनेर हमारी अपेक्षाओं के बारे में स्पष्ट होने से और उनके स्पष्ट रूप से संवाद करने मे शिक्षार्थी को बेहतर सीखने और प्रदर्शन करने में मदद करता है। हमारे शिक्षण उद्देश्यों (अर्थात, ज्ञान और कौशल जो हम शिक्षार्थीयों से अपेक्षा करते है और पाठयक्रम के अंत तक प्रदर्शित का स्पष्ट लक्ष्य मिलता है और उन्हे अपनी प्रगति की नियंत्रित करने में सक्षम बनाता है।

प्रभावी शिक्षण में हमारे द्वारा चयनित ज्ञान और कौशल को प्राथमिकता से केन्द्रीय करना शामिल है (Effective teaching involves prioritizing the knowledge and skills we choose to focus on)

एक कोर्स में बहुत अधिक करने की कोशिश नही करना चाहिये। बहुत से विषय शिक्षार्थियों के सीखने के खिलाफ कार्य करते है, इसलिये हमारे लिये यह निर्णय लेना आवश्यक है जो मुश्किल वाले होगें कि कौन सी सामग्री शिक्षण के पाठयक्रम में शामिल करना है कौन सी सामग्री नही शामिल करना है इसमें शामिल है (a) पाठयक्रम/कोर्स के मापदण्डों को पहचानना उदाहरण के लिये, क्लास का साइज शिक्षार्थी की पृष्ठभूमि और अनुभव कोर्स/पाठयक्रम अनुक्रम में पाठयक्रम की स्थिति, कोर्स की इकाईयों की संख्या।

Effective teaching involves recognizing and overcoming our expert blind spots.

दूसरी तरफ शिक्षार्थियों के पास अभी तक पर्याप्त पृष्ठ भूमि और अनुभव न होने के कारण, उसे नही कर सकते है और भ्रमित हो सकते है, गलत निष्कर्ष निकाल सकते है, या विकसित करने में असफल हो सकते है, उन्हें कार्यो को स्पष्ट रूप के लिये सबंधों को स्पष्ट रूप से समझाने के लिये और आदर्श प्रक्रियायों को विस्तृत रूप से मसझाने के लिये, प्रशिक्षाकों की आवयकता होती है। हालांकि विशेषज्ञों के लिये ऐसा करना मुश्किल होता है, लेकिन हमे ज्ञान और कौशल को चिन्हित करने और स्पष्ट रूप से संवाद करने की आवश्यकता, जिसका हम महत्व नही समझते है ताकि शिक्षार्थी विशेपज्ञ क्रियांवित करने का अभ्यास कर सके।

प्रभावी शिक्षण में हमारे सीखने के लक्ष्यों का समर्थन करने के लिये उपयुक्त शिक्षण भूमिकाओं का शामिल होना (Effective teaching involves adopting appropriate teaching roles to support our learning goals)

हम अपने शिक्षण में विभिन्न भूमिकाओं को अपना सकते है (उदाहरण के लिये, सिंके साइजर मॉडरेटर, चैलेजर कमेंटेटर)। इन भूमिकाओं को सीखने के उद्देश्यों कार्यो में और अनुदेशात्मक गतिविधियों के समर्थन चुना जाना चाहिये।

प्रभावी प्रशिक्षण में प्रतिबिंब और प्रतिक्रिया के आधार पर उत्तरोतर परिष्कृत पाठयक्रम को शामिल होना (Effective teaching involves progressively refining our courses based on reflection and feedback)

शिक्षण के लिये अनुक्रशलता की आवश्यकता होती है। हमे अपने शिक्षण पर लगातार चिंतन करने और उपयुक्त होने पर परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है क्या और कैसेस बदलता है, इसके लिये हमे आने शिक्षण प्रभाव पर प्रासंगिक जानकारी के परिक्षण करने की आवश्यकता होती है। हम एक पाठयक्रम के शिक्षण उद्देश्यों, सामग्री संरचना या प्रारूप को संशोधित कर सकते है या अन्यथा हमारे शिक्षण को समायोजित कर सकते है।

शिक्षण के सिद्धांत (Principles of Teaching)

ये आचरण के सिद्धांत या नियन अभिव्यक्ति के सिद्धांत से निकटता से जुडे है सरल शब्दों में शिक्षण पद्धति दो प्रकार के सिद्धांतों पर आधारित होती है सामान्य सिद्धांत आधारित होती है : सामान्य सिद्धांत और मनोवैज्ञानिक सिद्धांत।

1 **प्ररेणा का सिद्धांत (Principle of Motivation):** यह सीखने वाले में नई चीजें सीखने की जिज्ञासा पैदा करता है।

2 **गतिविधियों का सिद्धांत (करके सीखना) (Principle of Activity (learning by doing)):** फ्रोबेल की किंड गार्डन (के जी) सिस्टम इसी सिद्धांत पर आधारित है। इसमें थारिटिक और मानसिक दोनों प्रकार की गतिविधियाँ शामिल है। उदाहरण के लिये, शिक्षाकीयों से चार्ट और माडल बनवाना।

3 **रूचि का सिद्धांत (Principle of Interest):** शिक्षार्थी समुदाय के बीच वास्तविक रूचि पैदा करके, शिक्षण सीखने की प्रक्रिया को प्रभावशीलता को बढाया जा सकता है।

4 **जीवन से जुडने का सिद्धांत (Principle of linking with life):** जीवन एक निरंतर अनुभव है और जीवन से जुडी शिक्षा स्थायी हो सकती है।

5 **निश्चित लक्ष्य का सिद्धांत (Principle of Definite aim):** शिक्षण संसाधनों के अनुकलतम उपयोग और सीखने को अधिक केन्द्रीय बनाने के लिये यह महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

6 **व्यक्तिगत अंतरों को पहचानने का सिद्धांत (Principle of Recognizing individual differences):** प्रत्येक शिक्षार्थी बुद्धि दृष्टि कोण, क्षमताओं और क्षमता, सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के मामले में अद्वितीय होते है। जब सभी शिक्षार्थी जीवन में समान अवसरों का लाभ उठाने के लिये इस तरह से काम करते है तो शिक्षण पद्धति को इस तरह से विकसित किया जाना चाहिए।

7 **चयन का सिद्धांत (Principle of Selection)**: ज्ञान का क्षितिज प्रत्येक दिन घट रहा है। शिक्षक उन सामग्रियों को लेने में सक्षम होना चाहिये जो अधिक प्रासंगिक हो सकती है और शिक्षार्थीयों के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिये, अघतन कर सकती है।

8 **योजना का सिद्धांत (Principle of Planning):** प्रत्येक शिक्षक के कुछ निश्चित समय बद्ध उद्देश्य होते है और इसलिये, संसाधनों के अनुकूतम उपयोग के लिये शिक्षण व्यवस्थित होना चाहिये और समय-सीमा में होना चाहिये।

9 **विभाजन का सिद्धांत (Principle of Division):** सीखने को आसान बनाने के लिये, विषय वस्तु को इकाईयों में विभाजित किया जाना चाहिये और इकाईयों के बीच सबंध होना चाहिए।

10 **रिविजन का सिद्धांत (Principle of Revision):** सीखने को स्थाई बनाने के लिये, अर्जित ज्ञान को तुरन्त रिविजन (दोहराव) करना चाहिये और बार-बार रिविजन करना चाहिये।

11 **मनोरंजन और के सिद्धांत (Principle of Certain and Recreation):** यह सिद्धांत क्लास रूम के माहौल को हास्यपूर्ण और रचनात्मक बनाने के लिये आबध्यक है।

12 **लोकतांत्रिक व्यवहार का सिद्धांत (Principle of Democratic dealing):** यह अलग-अलग गतिविधियों की योजना बनाने और निष्पादित करने में शिक्षार्थियों को मजबूर करता है यह सीखने वालों के बीच आत्मविश्वास और आत्म सम्मान विकसित करने में मदद करता है।